Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2019 SHISRRJ | Volume 2 | Issue 6 | ISSN : 2581- 6306

# कालिदास का आदर्श प्रेम

उमेश चन्द्र मिश्र
प्रवक्ता(पी.जी.टी)-संस्कृत
जे.बी.सी.+२ विद्यालय,जामताड़ा
झारखण्ड

**शोध आलेख सार–** आदर्श प्रेम का यह काव्य जड़ चेतन के प्रति मार्मिक अनुभूति को देने वाला एवं मर्त्य से अमर बना देने वाला भारत का आदर्श प्रेम है।

**मुख्य शब्द –** कालिदास, आदर्श प्रेम, मेघदूतम्, प्रेमी प्रेमिका।

महाकवि कालिदास रचित मेघदूत में जिस प्रकार एक आदर्श प्रेम को प्रस्तुत किया गया है वह स्वरूप शायद ही अन्य काव्यो में मिल पाए। दंड स्वरूप यक्ष का अपनी पत्नी से दूर रहना और उस विरह काल में अपनी विरह व्यथा का संदेश दूत मेघ के माध्यम से अपनी प्रियतमा यक्षिणी के पास पहुँचाना प्रत्येक विरही जनों के मर्म को छू लेने वाला है । यक्ष तो केवल निमित्त मात्र है। सच्चाई तो यह है की विरह –वेदना से युक्त काव्य में सम्पूर्ण मानव समाज की वेदना जैसे आँखौं के सामने उपस्थित हुई सी दिखाई देने लगती है । वही चिंतन ,वही अनुभव ,वही आशाएँ ,वैसा ही अंतर्मन , वही न बीतने वाली राते ,सारा परिदृश्य क्या नदियाँ, क्या पर्वत, क्या सागर ,क्या वन , क्या पशु – पक्षी सभी में विरह का भाव इस प्रकार प्रस्तुत किया है जैसे द्वैत से अद्वैत की स्थापना कर दी गई हो।

जिस प्रकार सामान्य मानव विरह के समय विचलित हो जाता है एवं चेतन व अचेतन का भेद नहीं कर पाता है उसी तरह विरही यक्ष विरह के कारण काम पीड़ित होकर जड़ य चेतन में भेद नहीं कर पाता है तथा मेघ को अपना दूत बनाने की परिकल्पना करता है तथा इस परिकल्पना को साकार रूप देने के लिए मेघदूत में कहा गया है की "कामार्ता ही प्रकृतिकृपणा श्चेतना चेतनेषु ।" विरह भाव की परिकल्पना के स्वरूप अमरकंटक पर्वत की विरहाग्नि को मेघ द्वारा वर्षा से शांत करने के लिए कहा गया है । जिस प्रकार कामीजन विरह की अवस्था में सोचते है उसी क्रम में सिध्दगणों की कामक्रीडा को गर्जन के माध्यम से गाढ़ालिङ्गन को बढ़ा देने का सन्देश दिया जा रहा है । सिन्धुनदी जो विरह के कारण दुबली अर्थात् वर्षा पूर्व अल्प जलवाली हो गई थी उसे मेघ तुम वर्षा के माध्यम से विरह दूर कर देना । यहां मेघ व सिन्धु नदी को नायक –नायिका की तरह प्रस्तुत किया गया है । विरह काल में जिस प्रकार कामी लोग प्रत्येक यथोचित स्थान पर काम –भावना देखते है [अहो कामी स्वतां पश्यति] उसी प्रकार गम्भीरा नदी के लिए कहा गया है की **"ज्ञातास्वादो विवृतजघनां को विहातुं**

**समर्थः"** अर्थात काम-क्रीड़ा के स्वाद को जानने वाला भला कौन नग्न जघ्न स्थल वाली को छोड़ने में समर्थ होगा। यहाँ कवि का भाव है कि मेघ तुम भी गंभीरा नदी में वर्षा के माध्यम से काम की पूर्ति करके तब आगे बढ़ना।

इस प्रकार एक-एक प्राकृतिक घटनाओं का वर्णन सभी में मानव एवं प्रकृति का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध को जिस प्रकार एकता के सूत्र में बांधा गया है वह निश्चित रूप से संवेदना सहानुभूति ,प्रेम ,करुणा,दया इत्यादि से युक्त है जिस प्रकार विरह के समय अपना निवास स्थान स्वर्ग से बढ़कर(स्वर्गादपि गरीयसी)लगने लगता है। उसी प्रकार यक्ष अपने अलकापुरी के बारे में कहता है कि वहाँ पर रहने वालों के आंसू केवल आनंद के कारण गिरते है। यक्ष अपनी पत्नी का वर्णन करते हुए कहता है कि-

तन्वी श्यामा शिखरिदशना पक्वबिम्बाधरोष्ठी
मध्ये क्षामा चकितहरिणी प्रेक्षणा निम्ननाभिः|
श्रोणी भारादलसदगमना स्तोकनम्रास्त्वाभ्यां
या तत्र स्याद्युवति विषये सृष्टिराद्येव धातुः||[1]

अर्थात मेरी भार्या दुबली-पतली ,युवावस्था को प्राप्त नुकीले दांतों वाली,पके बिम्ब फल के सामान निचले होठ वाली,पतली कमर व भयभीत हरिणी के सामान नयन वाली,गहरी नाभि एवं नितम्ब भार से मंद-मंद गति वाली स्तनो से कुछ झुकी हुई तथा युवतियों में ब्रह्मा की प्रथम रचना सी जो हो (उसे हमारी पत्नी समझना)

इस श्लोक के बारे में पाश्चात्त्य विद्वान् विल्सन महोदय नें कहा कि सुन्दर एवं लघु काव्य मेघदूत का यह सबसे आनंदप्रद भाग है ऐसा नमूना अन्यत्र कहीं नही मिलेगा जहाँ इससे अधिक सुकुमारता एवं कोमलता विद्यमान हो।

आगे यक्ष अपनी सह – धर्मचारिणी का मार्मिक वर्णन करते हुए कहता है कि वह विरह के समय चकवी के सामान अकेली और बहुत कम बोलने वाली, रोने से अत्यधिक सूजी हुई नेत्रों वाली विरह के शेष दिनों को फूलो से गिनती करती हुई, न कटे हुए नाखूनो वाली, पृथ्वीतल की शय्या पर करवट सी पड़ी हुई एवं आसुओं के भारी प्रवाह द्वारा रोकी गई नीद को चाहती हुई सी दिखाई देगी। यहां पर पतिव्रता नारी की शुचिता के साथ ही सजीव चित्रण करना कवि की विशिष्टता को प्रकट करता है ।[2]

यक्ष द्वारा मेघ को पहचान स्वरूप स्वप्न में अपने प्रियतम को दूसरी रमणी के साथ देखने की बात को बताना प्रेमी – प्रेमिकाओ की सामान्य मनोदशा को प्रकट करने वाला है। उस विरहावस्था में भी यह कहना कि-

स्नेहानाहुः किमपि विरहे ध्वंसिनस्तेत्वभोगा
दिष्टे वस्तुन्युपचितरसा: प्रेमराशीभवन्ति ||[3]

अर्थात कहते है की दूर रहने से प्रेम में कमी आ जाया करती है किन्तु भोग के अभाव में अभीष्ट विषय में रस बढाए हुए प्रेम-पुंज बन जाता है।[4] इस प्रकार यक्ष का विरहावधि में भी सकारात्मक सोच एवं धैर्य को बनाए रखने वाला सन्देश है ।[5]

इस तरह कालिदास का मेघदूत अनेकानेक श्रृंगारिक काव्य ग्रंथो की श्रेणी में शीर्ष पर रखा जाता है ।[6] मेघदूत को देखकर अमरूकशतक का यह पद एकदम सटीक लगता है –

प्रासादे सा दिशि दिशि च सा पृष्ठतः सा पुरः सा
पर्यंके सा पथि पथि च सा तद्वियोगतुरस्य|
हं हो चेतः प्रकृतिरपरा नास्ति में कापि सा सा
सा सा सा सा जगति सकले कोSयमद्वैतवादः||

अर्थात वियोग की आतुरता में वह कहाँ कहाँ नही दिखती?वह महल में दिखती है, प्रत्येक दिशा में दिखती है ,पीछे दिखती है,आगे दिखती है ,पलंग पर दिखती है,पथ-पथ में दिखती है।[7] हाय मैं क्या बतलाऊँ?मेरा चित्त उसको छोड़कर कुछ सोच ही नहीं पाता ।[8] लगता है उसको छोड़कर मेरी कोई प्रकृति नहीं है |समस्त जग में वही है ,वही है,वही है,वही है,वही है, वही है यह जाने कैसा अद्वैतवाद है।[9]

इस प्रकार आदर्श प्रेम का यह काव्य जड़ चेतन के प्रति मार्मिक अनुभूति को देने वाला एवं मर्त्य से अमर बना देने वाला भारत का आदर्श प्रेम है।

सन्दर्भ

1. मेघदूतम्– श्री तारिणीश झा
2. मेघूदतम्– डॉ संसार चन्द्र, डॉ महोनदेव पंत
3. संस्कृत साहित्य का इतिहास– डॉ.कपिल देव द्विवेदी
4. संस्कृत साहित्य का इतिहास– वाचस्पति गैरोला
5. अभिज्ञानशाकुन्तलम् – डॉ.कपिल देव द्विवेदी
6. अभिज्ञानशाकुन्तलम्– सुबोधचन्द्र पंत
7. मालविकाग्निमित्रम्–मोहनदेव पंत
8. रघुवंशम्– धारादत्त शास्त्री
9. संस्कृत साहित्य का इतिहास– बलदेव उपाध्याय